मनमुरादें

Shivangi Khandelwal

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Shivangi Khandelwal 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-226-6

First Edition: August 2026

समर्पण

उन एहसासों के नाम
जो कभी कहे नहीं गए,
और उन रिश्तों के नाम
जो बिना नाम के भी गहरे रहे।

अपने उस हिस्से को
जो हर बार टूटकर भी
लिखता रहा।

और आपको—
जो इन शब्दों में
खुद को ढूंढ लेंगे।

आभार

इस किताब के हर शब्द के पीछे कोई न कोई एहसास, व्यक्ति या पल जुड़ा है।

मैं अपने परिवार का दिल से धन्यवाद करती हूं, जिन्होंने हमेशा मुझे समझा—even when I couldn't explain myself.

उन सभी लोगों का आभार, जो मेरी ज़िंदगी में आए—कुछ ठहर गए, कुछ गुजर गए—पर हर किसी ने मुझे कुछ न कुछ सिखाया।

मेरे उन खामोश लम्हों का भी धन्यवाद, जिन्होंने मुझे लिखना सिखाया।

और अंत में—खुद का...
क्योंकि लिखना आसान नहीं था, लेकिन रुकना उससे भी मुश्किल था।

भूमिका – by "A Reader"

"मनमुरादें" सिर्फ कविताओं का संग्रह नहीं है—यह एक दिल की डायरी है।

हर कविता में एक सच्चाई है, एक अपनापन है, जो पाठक को अपने अनुभवों से जोड़ देता है। यह किताब हमें याद दिलाती है कि भावनाएं कभी पुरानी नहीं होतीं—बस हम उन्हें महसूस करना भूल जाते हैं।

शिवांगी खंडेलवाल की लेखनी में सादगी है, पर वही सादगी इसकी सबसे बड़ी ताकत है।

यह किताब आपको पढ़ने से ज़्यादा महसूस करने पर मजबूर करेगी।

प्रस्तावना

“मनमुरादें” कोई योजना बनाकर नहीं लिखी गई किताब है।

ये उन लम्हों का संग्रह है
जो अचानक दिल में आए
और शब्द बनकर कागज़ पर उतर गए।

कभी ये प्यार था,
कभी इंतज़ार,
कभी शिकायत,
तो कभी खुद से बातचीत।

मैंने बस उन्हें रोकने की कोशिश नहीं की।

अगर इन शब्दों में आपको अपना कोई हिस्सा दिखे—
तो समझिए, ये किताब अपनी मंज़िल तक पहुंच गई।

उल्लेख

1. इस बार 1
2. बीते लम्हे 3
3. जान 7
4. फ़िर मिलेंगे 10
5. गिरफ्तार 12
6. मैं कौन हूं 14
7. बिन मौसम बरसात 16
8. तेरे मेरे बीच 19
9. इत्तेफ़ाक 21
10. पेन 23
11. बेपर्दा 24
12. तुम वो तो नहीं 27
13. ह्मराज़ 30
14. गरमाहट 32
15. वक्त 34
16. किताब 35
17. सांस्कृतिक विरासत 36
18. तेरे संग 38
19. अमानत 40
20. सफ़रनामा 42
21. डर 44
22. वादियां 46
23. मोहब्बत 48

24. मात्रभूमि से ज़मीं तक 50
25. लाडो 51
26. नया मोड़ 52
27. कुदरत 56

मनमुरादें

1. इस बार

बात ये नहीं कि कोई बात नहीं।
तुम पास तो हो पर साथ नहीं।।

आजकल तेरा आना खास नहीं लगता।
तेरे जाने से अधूरा सा एहसास नहीं लगता।।

अभी अभी तो फासले कम लगने लगे थे।
फिर क्यों कहते कहते अल्फ़ाज़ थमने लगे थे।।

कुछ अनकहा सा मानो घर कर गया था।
ख्यालों में एक ख्याल शायद असर कर गया था।।

हर बार उन लम्हों को तेरी ओर से जाना था।
अब लगता है उन में बस मेरा ही ठिकाना था।।

कुछ बदल सा गया है या बस एक वहम।
फिर इस सवाल पे मन क्यों गया सहम।।

कुछ तो है जो ज़ुबां तक आ रुका।
लाख सोचा पर दिल अब थक चुका।।

खैर छोड़ो इस बार भी जानें देता हूं।
इस अजब कशमकश में कहीं खुदको मिटा बैठा हूं।।

अभी भी वक़्त है वक़्त पे संभल जाना।
दिल ने फिर इस दिल को दिया ये बहाना।।

अगली मुलाकात में फिर नज़रे चुराऊंगा।
तुम हमेशा की तरह चुप रहना मैं फिर भी समझ जाऊंगा।।

फिर बिना सवाल के सवाल रह जाएंगे।
जवाब ढूंढते-ढूंढते हम फिर कहीं खो जाएंगे।।

जो इस बार टकराए तो दीदार हो जाएगा।
सच कहता हूं जान इस बार तो प्यार हो जाएगा।।

2. बीते लम्हे

कल यूहीं बैठकर
पुराने पन्ने पलटा रही थी।
अलमारी में पड़ी धूल को
बड़े प्यार से सरका रही थी।।

यही सिलसिला चलके
एक डायरी तक आ पहुंचा।
तस्वीर थी एक उसमें
या था आंखो का धोखा।।

कौन है ये शख्स
जो होठों पे हंसी ले आया है।
कहीं ये वही तो नहीं
जो अब तक ऑफिस से नहीं आया है।।

उन दिनों को याद कर
बस यूंही गुनगुना रही थी।
मानो जैसे बीते लम्हे
ज़िन्दगी दोहरा रही थी।।

जिसे क्लास में बैठकर
पेंसिल से मारा करती थी।
कभी रबर तो कभी कटर पर
रोज़ लड़ा करती थी।।

आज उसी के लिए
सुबह जल्दी उठ जाती हूं।
देर शाम दरवाज़े पर
राह तकती जाती हूं।।

कल ही की तो बात है
जब मम्मी पापा ने हैंडशेक करवाया था।
बिना मेरे कंसेंट के
बेस्टफ्रेंड का टैग लगवाया था।।

सोचा नहीं था इस पागल को
इतना लंबा झेलूंगी।
रबर शार्पनर तक तो ठीक था
सीधा दिल ही दे बैठूंगी।।

तो हुआ कुछ ऐसा
ज़रा फ्लैशबैक से बतलाती हूं।
तू से आप तक की कहानी
थोड़ा ब्रीफ में दिखलाती हूं।।

शायद उदास सी मैं उस दिन
घर की ओर जा रही थी।
स्कूल के आखरी दिन की याद में
आंसू बहा रही थी।।

तभी साइकिल पे ट्रिन ट्रिन करता
वो पीछे से आ गया।
सारी सड़क छोड़ बावला
आकर मुझसे ही टकरागया।।

गुस्से से आंख लाल
चेहरा गरम हो गया।
मैं कुछ कहती उससे पहले ही
वो बीच सड़क पर रो गया।।

उस दिन देखा ध्यान से
ये कार्टून नहीं क्यूट है।
मैं डांट न दूं ज़ोर से
इस डर के मारे म्यूट है।।

कोई फालतू अप्रोच नहीं
बस दूर से देखकर हंसा करता था।
थोड़ी देर लगी समझने में
कि देखकर नहीं हंसकर देखा करता था।।

फिर एक दिन लाइब्रेरी में
वो मुझसे टकरा गया।
तब दिमाग में क्लिक हुआ
ये इस कॉलेज में कहां से आ गया।।
अब तो नोट्स के बहाने
धीरे धीरे मुलाकात शुरू हो गई।
पता नहीं कब जाने फोन पे
डेली बात शुरू हो गई।।

पलके झपकते ही
वो वक़्त भी बीत गया।
प्यार और फ्यूचर की दौड़ में
कैरियर जीत गया।।

मैं यहां वो वहां का
दौर जारी कब हुआ।
क्या करूं क्या न करूं का
टेंशन भारी तब हुआ।।

तभी एक दिन चुपके से वो
छत पर मिलने आ गया।
बिन पूछे बस नज़रों से
वो दिल की बात सुना गया।।

उस पल मन की कशमकश को
एक अजीब सा सुकून मिला था।
कन्फ्यूजन के दरवाज़े पर दस्तक दिए
जैसे सॉल्यूशन आ खड़ा था।।

उस छोटी सी टैरिस मीटिंग में
मुझे अपनी डेस्टनी बना गया।
एक सांस में लव यूं से मैरी मी तक की
स्टोरी सुना गया।।

तो कुछ इस तरह जुड़े थे
नैनों के तार हमारे।
लो अब इतने साल बाद कहते हैं
हम तो अच्छे थे कुवांरे।।

चलो अब इन हसीन लम्हों के
पन्ने समेट लेती हूं।
तभी पीछे से आवाज़ आई
कब से नॉक कर रहा हूं अजी सुनती हो।।

3. जान

दुपट्टा तेरा हवा में
कुछ इस कदर लहराया।
जान मेरी, मेरी जान है तू
फिर यही फरमान लाया।।

उड़ती हवा में आंचल तेरा
मेरे चहरे से गुज़रता है।
लाख संभालू दिल मेरा
फिर भी दर-ब-दर भटकता है।।

खुशबू तेरी आसपास मेरे
हर रोज़ घेरा बनाती है।
मैं रोकता तो हूं खुदको
पर वो साथ बहा लेजाती है।।

दुपट्टा तेरा हवा में
कुछ इस कदर लहराया।
जान मेरी, मेरी जान है तू
फिर यही फरमान लाया।।

फिरोज़ी सा रंग है उसका
कड़ाई बंधेज़ की करी है।
एक अरसा बीत गया तुझे देखे
मानो जैसे ओढ़े उसे पास मेरे खड़ी है।।

आज भी तेरे कंगन की
खन-खन पे जागता हूं।
जो पलट के देखू
तेरी पायल की छन-छन आलापता हूं।।

दुपट्टा तेरा हवा में
कुछ इस कदर लहराया।
जान मेरी, मेरी जान है तू
फिर यही फरमान लाया।।

हर शाम कोशिश करता हूं
फिर भी ये खत अधूरा है।
एक चांद दिल में कैद मेरे
और एक फलक पे पूरा है।।

पुकारूं जो नाम तेरा
आवाज़ दूर शिखर तक जाती है।
बिल्कुल उसी तरह जैसे
टूटकर तू बाहों में मेरी बिखर सी जाती है।।

दुपट्टा तेरा हवा में
कुछ इस कदर लहराया।
जान मेरी, मेरी जान है तू
फिर यही फरमान लाया।।

तेरे झुमके के हर साज़ को
मैं गुनगुनाता रहता हूं।
बिन बात अकेले बैठकर
यूहीं मुस्कुराता रहता हूं।।

बिंदिया तूने माथे पे
जो मेरे नाम की सजाई है।
वादा करता हूं ये बीच हमारे
बस कुछ और पल की जुदाई है।।

दुपट्टा तेरा हवा में
कुछ इस कदर लहराया।
जान मेरी, मेरी जान है तू
फिर यही फरमान लाया।।

दूर तुझसे हूं भले
पर पास अपने वतन के हूं।
जानेमन तू है मेरी
पर मैं साथ अपने सजन के हूं।।

सात फेरे में बांध मुझे
तूने पास अपने बुलाया था।
मैं रुक जाता कुछ देर सही
पर एक रिश्ता सरहद से आया था।।

दुपट्टा तेरा हवा में
कुछ इस कदर लहराया।
जान मेरी, मेरी जान है तू
फिर यही फरमान लाया।।

4. फ़िर मिलेंगे

बार बार छत पर यूं ही मत टहलना।
कुछ ख़ास कहते कहते यूं ही मत ठहरना।।

माना ये बातें थोड़ी कम सी जाएंगी।
मेरे जानें से शायद तेरी ज़िंदगी थम सी जाएगी।।

तू फ़िक्र मत करना मैं आस पास ही रहूंगी।
सवेरे तेरे दिल में और रातों को आंखो से बहूंगी।।

एक वादा मैं करती हूं एक कसम तू निभाना।
मैं कितना भी दूर रहूं तू आकर मुझे ले जाना।।

अच्छा सुनो शायद अब नहीं सुनोगे।
मैं कुछ नहीं कहूं पर तुम खुदसे ही कहोगे।।

फिर शायद दिल की बातें दिल तक ही रह जाएंगी।
तुम सब संभाल के रखना जब मेरी बारी आएगी।।

फिर कब मिलेंगे ये बता नहीं सकती।
दर्द तो है ये पर दिखा नहीं सकती।।

न जाने अब ये बातें फिर कब दोहराएंगे।
तेरी बाहों में कहीं रहकर ख़ुदमें सिमट जाएंगे।।

वो रात न जाने अब कब मेहरबान होंगी।
जब ख्वाब तेरे हसीन और छत आसमान होगी।।

एक कदम मैंने बढ़ाया एक हाथ तुम बढ़ाना।
कुछ देर तक ना मिलू तो दौड़े चले आना।।

तारों के नीचे साथ तेरे एक छोटा सा घर बनाना है।
पूरी उम्र तेरे संग मुझे कुछ नई यादें बनाना है।।

5. गिरफ्तार

आज हवाओं का रुख कुछ अलग सा लग रहा है।
आज घटाओं का शोर कुछ अजब सा लग रहा है।।

खिड़की से बाहर आज बादल नहीं आसमान है।
पंछियों की चहचहाहट में फिर एक नया अरमान है।।

अपने ही घरों में बंद आज ज़िंदगी का हर एक किरदार है।
जो कल तक आज़ाद थे आज अपनी ही कैद में गिरफ्तार है।।

प्रकृति के नियम नहीं बस हालात बदल गए है।
वक़्त में उलझे कई ख्यालात बदल गए है।।

झरोखों से अब धूल नहीं बस रोशनी छनकर आती है।
बागों में हर फूल की कली बस धूप से नहाती है।।

बंद दरवाजों में आज हम किस बात के हकदार है।
जो कल तक आज़ाद थे आज अपनी ही कैद में गिरफ्तार है।।

उड़ान भरते पंछी आज सड़कों पर चलना सीख गए।
इंसान से डरते डरते आज खुद से ही लड़ना सीख गए।।

समंदर में अब शोर नहीं सुकून कि लहर बहती है।
किनारों से अब दिल की बातें बेफिक्र होकर कहती है।।

धरती के इस नए रूप के क्या हम ही ज़िम्मेदार है।
जो कल तक आज़ाद थे आज अपनी ही कैद में गिरफ्तार है।।

सुबह सुबह घड़ी नहीं अब कोयल की आवाज़ उठाती है।
सूरज की किरणें दरवाज़े पर अब दस्तक देने आती है।।

अपनों के साथ रहने की कीमत का आज एहसास हो गया।
ये पल सब से कीमती है जब मुश्किल का आगाज़ हो गया।।

कर्मो के इस हिसाब में हर शख्स भागीदार है।
जो कल तक आज़ाद थे आज अपनी ही कैद में गिरफ्तार है।।

6. मैं कौन हूं

मैं कौन हूं
ये बेशक तेरा सवाल है।
मैं क्या हूं
छिड़ा तो इस बात पर बवाल है।।

मैं वो ख्वाब नहीं
जो तुम रातों को देखा करते हो।
वो हकीक़त हूं तेरी
जिस से तुम रोज़ रूबरू करते हो।।

जब ढलती हुई शाम में
रोशनी पर्दा करती है।
तब ख्वाहिशें तेरी आंखो से
बेफिक्र बेपर्दा करती है।।

तेरी आंखो में कुछ बातें
साफ नज़र आती हैं।
बार बार यूं ही देखना
दिल का हाल सुनाती हैं।।

कैसे हुआ ये
मैं हर बार पूछती रहती हूं।
जवाब माना ज़रूरी नहीं
फिर भी इस बात पे अटकी रहती हूं।।

प्यार तो है पर प्यार नहीं
बड़ा मुश्किल सा सवाल है।
जान तो है तू जान मेरी
फिर भी ये दिल बेहाल है।।

सुना है आजकल तुम
रातों को जल्दी सो जाते हो।
मुझे कैसे पता
तुम्हीं तो ख्वाबमें बताते हो।।

बिना नशे के आजकल
मदहोश फिरते रहते हो।
मेरे सवालों पर आजकल
ख़ामोश फिरते रहते हो।।

क्या तुम भी सोते हुए
अचानक जाग जाते हो।
बात मेरी हो न हो
फिर भी मुझे बताते हो।।

खिड़की पे खड़ी मैं तुझे
अब नहीं तलाशती।
थाम लिया तूने पीछे से
यही बात तो ख़ास थी।।

7. बिन मौसम बरसात

प्याज के गरमा गरम पकोड़े और एक प्याली चाय का साथ।
मानो जैसे खुले आसमान में बिन मौसम बरसात।।

वो छत की तरफ भागती हुई पायल की छन छन।
कपड़े भीग ना जाएं, इस बात से भाभी की बढ़ती हुई धड़कन।।

चिंटू के कीचड़ भरे जूते और भैया की नकली डांट।
शायद यही मस्ती लाती है ये बिन मौसम बरसात।।

वो गीली मिट्टी की सौंधी सी खुशबू जब मन को छू जाती है।
मानो जैसे बारिश की भूंदे आंखों से होते हुए दिल में उतर जाती है।।

छत पर रखे हुए अचार की टेंशन में दादी का चिल्लाना।
मां को ताने मारते हुए छत की ओर खुद जाने का नाटक दिखाना।।

दादाजी का मां की तरफ वो चिलआउट वाले इशारे का साथ।
रिश्तों में इसी तरह मिठास लाती है ये बिन मौसम बरसात।।

वो बादल गरजने से दीदी जब ज़ोर से डरती है।
मानो जैसे पत्तों से बूंदें टूट के गिरती हैं।।

मौका मिलते ही जिजू जो मज़ाक बनाते हैं।
आंख दिखाते ही दी कि, भिगी बिल्ली बन जाते हैं।।

तकरार भरा ये टशन वाला साथ।
ऐसे भी नज़ारे दिखलाती है ये बिन मौसम बरसात।।

अलमारी में कही छुपी हुई छतरियां, बड़ी शि्दत से ढूंढ़ी जाती हैं।
जब बारिश बिन बुलाए मेहमान की तरह, यूं ही चली आती है।।

मोहल्ले की सारी ड्रेनेज प्रोब्लम्स खुल के बाहर आजाती हैं।
जब रोड्स शक्ल बादलकर, स्विमिंगपूल बन जाती हैं।।

बेफिक्र बहते पानी को, कागज़ की कश्तीयो का साथ।
नन्हे से उन चेहरों पे मुस्कुराहट लाती है, ये बिन मौसम बरसात।।

कीसी के लिए आफत, तो किसी के लिए हसीन आलम बन जाता है।
फसलों के लिए दावत और किसानों के लिए वरदान बन जाता है।।

ये भीगा हुए मौसम कुछ इस तरह छाता है।
मानो जैसे एक्सपेक्टेशन से कुछ ज्यादा मिल जाता है।।

घुमसुम सी कई आंखो को, सुकून का साथ।
इस तरह बिन मांगे खुशियां बिखराती है, ये बिन मौसम बरसात।।

शेड से गिरता हुआ पानी, बच्चों के लिए खेल बन जाता है।
म्यूजिक लवर्स को धुन, और रेन हेटर्स को कीचड़ नज़र आता है।।

बरसती हुई बूंदों का, ये सुरीला सा साज़।
मानो जैसे घने सन्नाटे में एक धड़कन कि आवाज़।।

जब प्यार में डूबे दिल करते है मौसम से दर्खास्त।
शायद तभी मेहरबान होती है, ये बिन मौसम बरसात।।

किसी को बारिश से बचने की पनाह चाहिए।

तो किसीको बस भीगने की वजह चाहिए।।
काश मौसम मूड के हिसाब से बादल जाता।
मस्ती में बादल और खुशी में आसम हो जाता।।

कुछ इसी तरह आती है, ये खुशियों की सौगात।
जब टूट के हसीं बिखराती है, ये बिन मौसम बरसात।।

8. तेरे मेरे बीच

नज़रे चुराना छोड़ दो
मैं आज भी पढ़ लेती हूं।
बातें बनाना छोड़ दो
तेरा हर राज़ समझ लेती हूं।।

जो तू आते ही मेरे
कहीं खो सा जाता है।
ऐसे क्यों देख रहीं है
की अकड़ दिखता है।।

तू भी जानता है
मैं तेरी आंखें नहीं तेरा दिल देख लेती हूं।
तेरे बताने से पेल्हे
तेरा छुपा हुआ सच पता कर लेती हूं।।

तू साथ हो या नहीं
कहीं ना कहीं से देख रहा होता है।
तुझे ढूंढ़ने की कोशिश नहीं करती
मुझे पता है तू आंखे सेक रहा होता है।।

हर एक बात में तेरा ज़िक्र
आ ही जाता है।
फिर तू ना जाने क्यों
बीते लम्हे दोहराता है।।

साथ हर पल दूंगी
वादा खुदसे करती हूं।
हां ये सच है कि
तुझे सच कहने से डरती हूं।।

अब ये मत पूछना कि
किस बात का डर है।
क्या है तेरे मेरे बीच
ये जानता पूरा शहर है।।

9. इत्तेफ़ाक

हल्की सी शाम थी साथ बारिश की गुंजाइश थी।
पहचान भी नहीं थी नाही जानने की फरमाइश थी।।
वो पहली मुलाक़ात में आंखे चुप और दिल ज़रा नादान था।
एक दोस्त ने मिलवाया था हमें हर एक लम्हा मेहरबान था।।

मौसम कुछ बेईमान सा पर वक़्त बेहिसाब था।
मिलना हमारा ए सनम एक हसीन इत्तेफ़ाक़ था।।

ना जाने कब हम बेवजह ख्वाबों में दाखिल हो गए।
साथ रहे या ना रहे हर पल में शामिल हो गए।।
रातों की गहरी नींद से अब तू जगाने लगा था।
मैं सोजाता था वक़्त पर अब तेरा हर खयाल सताने लगा था।।

आदत तेरी यू पड़ी जैसे शायरी की किताब था।
मिलना हमारा ए सनम एक हसीन इत्तेफ़ाक़ था।।

हर सुबह तुझ से होने लगी हर शाम मैं तुझ में ढलता था।
तू पास रहे तो सब सही बिन तेरे हर लम्हा खलता था।।
साथ बिताए दिन कई वो रात पहली बार थी।
सिलवटें चादर की भी तेरे हुस्न की दिलदार थी।।

चांदनी दिलकश सी थी चांद जैसा तेरा लिबास था।
मिलना हमारा ए सनम एक हसीन इत्तेफ़ाक़ था।।

हाथों को थाम तेरे तेरी जुल्फों में कहीं खो गया।
होठों से जो होंठ छुए एक पल में दीवाना हो गया।।
धड़कने दिल की तेज़ और सांसों में कुछ गर्मी थी।
मुझ में ही सिमटी तू कहीं और आंखो में बेशर्मी थी।।

सवाल सारे थम गए बेपर्दा हर जवाब था।
मिलना हमारा ए सनम एक हसीन इत्तेफ़ाक़ था।।

बाहों में बाहें थी तेरी आंखो का नशा कुछ रूमानी था।
किस्से तो कई थे मगर अब तू मेरी कहानी था।।
इश्क़ तेरा पल भर का नहीं ताउम्र का फितूर था।
प्यार है ये ए जान मेरी बस इतना सा गुरूर था।।

मोहब्बत के बदले पाक़ वफ़ा कुछ वाक़िफ सा हिसाब था।
मिलना हमारा ए सनम एक हसीन इत्तेफ़ाक़ था।।

10. पेन

यूं तो हूं ज़रा सा पर कथाएं बड़ी रचाई है।
राइटर का मान और ऑटोग्राफ की शान मैंने ही तो बढ़ाई है।।

हिंदी में कलम और इंग्लिश में पेन कहलाया जाता हूं।
किसी के लिए यूज एंड थ्रो तो किसी के लिए ब्रांड कहलाया जाता हूं।।

भाई दिखता हूं सिम्पल सा बस डिफ़रेंट कलर्स में ढल जाता हूं।
स्टूडेंट्स के लिए ब्लू और टीचर्स के लिए रेड मंगवाया जाता हूं।।

काम एक ही है मेरा फिर भी बड़ी सोच समझकर खरीदा जाता हूं।
कहीं पिन पॉइंट तो कहीं बॉलपॉइंट के नाम से जाना जाता हूं।।

सूरत अलग पर सीरत एक ही है मेरी।
फिर भी किसी के लिए लकी तो किसी के लिए किस्मत की चाबी नज़र आता हूं।।

एडमिशन फॉर्म की लाइन में बड़ी आस से ढूंढा जाता हूं।
अंजान लोगो के बीच "भाई पेन है" पूछकर नए रिश्ते मैं ही तो बनवाता हूं।।

सिर्फ कंपनी नहीं पैकेजिंग भी देखकर सिलेक्ट किया जाता हूं।
किसी को गुड हंडराइटिंग तो किसीको शब्दों के माईने समझता हूं।।

किसी से मक्खन की तरह तो किसीसे अटक अटक के चल पाता हूं।
पेन हूं भाई लड़कियों से कम नहीं थोड़े नखरे मैं भी तो दिखता हूं।।

11. बेपर्दा

चलों एक बार फ़िर हसकर टाल दिया
वो हर ज़ख्म जो तुम दे गए।
हर ख्वाब फ़िर सजा लिया
वो जिनकी मासूमियत तक तुम ले गए।।

तोड़ा तुमने इस कदर था
की हर पल चूर हो गया।
मैं खुदमें ही सिमटी रही
तेरा चेहरा आंखो से दूर हो गया।।

चलो एक बार फ़िर ख़ुदको संभालूंगी
तेरी यादों को भूलने में।
हर उस गलती को सुधारूंगी
चाहे उम्र लग जाए मिटाने में।।

तूने पलटकर नहीं देखा
मैं किस कदर बिखर चुकी थी।
तू ख़ुश था अपनी दुनियां में
हर रंगत निखर चुकीं थी।।

चलों एक बार फिर रोशनी से
अंधेरों में बड़ जाऊंगी।
हर बार की तरह इस बार
नज़र नहीं आऊंगी।।

दिल तोड़ने से पलहे
ज़रा इक्ताला तो कर देते।
मुझे छोड़ने से पहले
मुझे तबाह तो कर देते।।

चलों एक बार फ़िर आंसुओं को
सिरहाने रख संभाल लिया।
धड़कनों ने दिल से कहा
एक बार फ़िर ये कमाल किया।।

तुझे माफ़ करने की आदत ने
मुझे बिगाड़ा था।
वो तो बस झूट था तेरा
जिसे प्यार समझ ख़ुदको संवारा था।।

चलों एक बार फ़िर तेरी शिकायत
ख़ुदसे करती हूं।
तू भूल गया हर लम्हा
मैं तुझपे जीती मरती हूं।।

इस बार रोशनी की ओर
एक नई सुबह लेकर आऊंगी।
तू क्या है क्या नहीं
ये अब मैं तुझको समझाऊंगी।।

चलों एक बार फ़िर
शुरू से शुरुवात करते हैं।
तेरे हर दिए दर्द का ज़रा
तबीयत से हिसाब करते हैं।।

तू मुझे जीता नहीं
मैं अपना दिल हार बैठी थी।
तेरी झुठी शकशियत से ना जाने क्यों
बेपनाह प्यार कर बैठी थी।।

चलों अब बौहत हुआ ख़ुदको सतना
अब तेरी बारी हैं।
ये ऐलान नहीं है जान मेरी
अब तेरे दिल से जंग जारी हैं।।

इस हद तक तुम्हें ले आऊंगी
बेफिक्र हर जवाब होगा।
तुम ख़ुद ख़ुदको मिटाओगे
जब बेपर्दा हर नक़ाब होगा।।

12. तुम वो तो नहीं

तुम वो तो नहीं
जिसे मैं देखा करती थी।
तुम वो तो नहीं
जिसे मैं सोचा करती थी।।

कौन हो तुम
जो नज़रों में नहीं सीधा दिल में उतर गए।
कौन हो जो
मेरी मंज़िल नहीं मेरा सफर सा बन गए।।

कहीं तुम वो तो नहीं
जो पिछले मोड़ पर टकराए थे।
हांव ही तो हो
जो मेरी खोई हुई डायरी लेकर आए थे।।

प्यार जिस से किया था
वो इतना कैसे बदल गया।
जैसे मांगा था फरि यादो में
वैसे मेरी रंगत में ढल गया।।

हमशक्ल हो उस राज़ के
जिसे मैने पन्नों में छुपाया था।
या आइना हो मेरे हमराज़ के
जिसने संग चलना सिखाया था।।

तुम वो तो नहीं
जो साथ होकर भी मेरे कहीं दूर सा रहता है।
तुम वो तो नहीं
जो हाथ मेरा थाम किसी और में ही मगरूर सा रहता है।।

कौन हो तुम
जो साथ मेरे बस मेरे से हो गए।
कौन हो जो
ढलती शाम में सुनहरे सवेरे से हो गए।।

कहीं तुम वो तो नहीं
जो देर रात मेरी खिड़की पर झकता है।
हां वही तो हो
जो आजकल बेवक्त मेरी राह ताकता है।।

दीवानी तो मैं अब भी
पर अब तुम कैसे संभल गए।
पत्थर से मोहब्बत की थी मैने
फिर तुम कैसे पिघल गए।।

काया हो मेरे मन की या
मेरे दर्पण का रूप हो।
माया हो पल भर की या
ठंडी सांझ की धूप हो।।

तुम वो तो नहीं
जिसे देखकर मैं यूहीं मुस्कुराती थी।
तुम वो तो नहीं
जिस की हर झलक पे मैं दीवानी हो जाती थी।।

कौन हो तुम
जो मेरे चेहरे की हर लकीर जानते हो।
कौन हो जो
मेरा होना अपनी तक़दीर मानते हो।।

कहीं तुम वो तो नहीं
जिसकी सुकून से मुझे देख आंखे भर आई थी।
हांव ही तो हो
जिसने बिन जाने मेरी डायरी चुराई थी।।

ये कैसे हुआ की तुम
मेरी हर कहीं हुई बात मान गए।
मैं जानती हूं तुम
मेरे हर पन्नों के राज़ जान गए।।

शायद इसलिए मैं उस दिन
मोड़ पर तुमसे मिलने आई थी।
तुम जैसे थे वैसे बनाने के लिए
जानकार वो डायरी गिराई थी।।
तुम वही तो हो
जिसे बिन पूछे बेइंतहां इज़हार कर बैठी थी।
तुम वही तो हो
जिससे बेपन्हा मैं प्यार कर बैठी थी।।

13. ह्मराज़

पहली नज़र का इश्क़ कहां।
ये खेल था बस आंखो का।।
कुछ तुम कहो कुछ हम सुने।
ये ख्याल था बस बातों का।।

हद की कोई फ़िक्र नहीं।
बेफिक्र सी उड़ान थी।
दोस्ती के गुब्बारे में।
वो प्यार कि मुस्कान थी।।

कौन सी वो तारिक थी।
कुछ धुंधला सा मुझे याद है।।
खाली सी वो एक सड़क।
कुछ हिचकिचाहट से भारी बातहै।।

नज़रे चुराकर तुम सनम।
वो तीन अल्फ़ाज़ कह गए।।
सच कहूं तेरी कसम।
मुझे साथ अपने ले गए।।

सिलसिला फिर यूं छेडा।
मिलना मुनासिफ हो गया।।
अगले ही पल गोद में।
तू सिर रखकर सो गया।।

कौन है तू मासूम सा।
जो खुदसे ज़रा नाराज़ है।।
भूल जो गया था बात मेरी।
की तू ही मेरा हमराज़ है।।

14. गरमाहट

तेरी बाहों की गरमाहट को
आज फिर दुड़ने निकला हूं।
जो खो दिया था दिल कहीं
वो हुज़ूर दूड़ने निकला हूं।।

जिस चहरे ने दीवाना कुछ
इस कदर बनाया था।
आज उसकी मुस्कुराहट को
हर ओर दुंडने निकला हूं।।

ख़ुदा से तुझे मांगकर
बस हाथों पे सज़ा लिया।
तेरे टूटने की आहट पर
फिर तेरा हाथ थाम लिया।।

दुनियां से तकराऊ क्या
सब लोग पराए लगते है।
आज झुटे रिश्ते त्यागकर
फिर से तुझे अपना लिया।।

क्या सही है क्या गलत
हर एक पल इंतेहान सा है।
इश्क़ कहूं या कहूं वफ़ा
हर लम्हा कुछ बेईमान सा है।।

आंखों से जब दूर मेरे
परेशान सा मन ये फिरता है।
मोहब्बत कहूं या गुरूर तेरा
हर ज़र्रा तेरे नाम सा है।।

आंखों में बस प्यार लिए
मैं चलता हूं तेरे राहों पे।
मंज़िल की मुझे फिक्र कहां
जब साथ है तू हर राहों पे।।

क्यों गिला सिकवा करू
जब लौट के तुझपे आना है।
यूं ही चले ताउम्र हम
बस यहीं तो सच है राहों पे।।

15. वक्त

लिखकर हर एक अल्फ़ाज़ मिटाने लगी हूं।
अब शायद खुदको तुझसे छुपाने लगी हूं।।

जो दुनिया तेरी आंखो से ख़ूबसूरत लगती थी।
अब उन्हीं आंखो से नज़रे चुराने लगी हूं।।

क्या वजह सब बेवजह सावल बस यही है।
मैं यहां हूं या नहीं ख्याल बस यही है।।

मुझसे शुरू तुझ पे ख़तम; एहसास जो मेरा था।
खो गई हूं धुंधला; हमराज़ जो तेरा था।।

दिल जुबां से आजकल कुछ दूर भागता है।
टोकता है फिर उसे तेरा साथ मांगता है।।

सामने है तू मेरे; फिर भी तलाशता है।
मंज़िल हूं मैं तेरी; तू मेरा रास्ता है।।
शिकायतों को तू मेरी; कसूर मानता है।
इनायतो को तू मेरी; दस्तूर मानता है।।

सुनना तेरी बातें मुझे; सुकून सा लगता है।
तेरा इश्क़ कभी सादा तो कभी; जुनून सा लगता है।।

16. किताब

कोरे पन्ने कागज़ के ख़ुद में कई अल्फ़ाज़ समेटे बैठे है।
कलम से मिलने की चाह में ना जाने कितने हालात समेटे बैठे है।।
कौन कहता कि बस दिल की धड़कने हर एक जज़्बात बताती है।
कभी पूछा है किताबों से हर एक पन्ने में कितने राज़ छूपाती है।।

स्याही में भिगोए शब्द जब गिरकर तर-ब-तर हो जाते है।
मन में दबे ख्याल तब खुलकर दर-ब-दर हो जाते है।।
दोस्त तो मेरे है कई पर वो साथी सा बन जाती है।
तन्हाइयों से खींचकर मुझको मेरी हर एक किताब ले आती है।।

बातें ख़ुदसे करते करते ना जाने कब ये हाथ रंग जाते है।
अपनी शिकायत ख़ुदसे करते करते डायरी के सारे पन्ने भर जाते है।।
आइने में जो देखूं खुदको बस काया नज़र आती है।
साएं में जब झांकता हूं अपने अक्षरों की माया नजर आती है।।

वादे तो सब करते है पर निभाना कितनों को आया है।
ताउम्र थामे साथ चलना मेरी किताब ने मुझे सिखाया है।।
हसना हो चाहे रोना हो ये कलम कागज़ की ओर बढ़ जाती है।
चेहरे की चमक से आंसू तक हर दिल का हाल सुनाती है।।

वाक़िफ हूं शब्दों की ताक़त से इसलिए ये दिल फिर एक
बार मिटने को तैयार है।
जो हाथों में कागज़ और कलम लिए है सामने उसके
नाकाम हर एक हथियार है।।
दुनियां से टकराकर कोशिशें मेरी जब टूटकर बिखर जाती है।
समेटे हर एक कतरा मेरा मेरी किताब मुझे फिर चलना सिखाती है।।

17. सांस्कृतिक विरासत

ज़िंदगी में आगे बढ़ते बढ़ते
शायद कुछ भूल रहे है हम।
इन नए यंत्रों की कशमकश में
शायद कुछ छोड़ रहे है हम।।

वो हर दिल की सर ज़मीं
वो इतिहासी ज्ञान की सूरत है।
वो है शान से खड़ी
वो हिंदुस्तानी धरोहर की मुहरत है।।

जैसे संभालते गहने हम
अपना सामान समझ के।
वैसे ही संझोहो धर्मों को तुम
अपना मान समझ के।।

छोटी छोटी मुश्किलों को हम
जीवन का अंत समझते है।
क्या खूब लिखा है ग्रंथो में
हम कब जीते कब मरते है।।

कोशिश तो करो उन्हें पढ़ने की
वो हर समाधान देते है।
तुम कष्ट तो करो ज़रा मुढ़ने का
भगवान हर पल साथ देते है।।

देवों ने तो संसार दिया
जीवन जैसा उपहार दिया।
इंसानों ने क्या काम किया
हिंदू मुस्लिम का नाम किया।।

मासूम सा दिल बनाया था उसने
ईर्ष्या कहां से तुम लाए।
सबको एक बनाया था उसने
भेद भाव कहां से तुम लाए।।

कुछ नहीं तो बस एक काम करो
सांस्कृतिक विरासत का सम्मान करो।
हम एक है बस ये थाम चलो
फ़िर इस पर तुम अभिमान करो।।

18. तेरे संग

छोर सी कोई डोर सी
मुझे खींचती तेरी ओर सी
मैं पतंग हूं सतरंग सी
तेरी धड़कनो के संग सी

माया हूं मैं काया हूं मैं
तेरे जिस्म की छाया हूं मैं
नदी हूं मैं; हूं नज़ारा भी
तेरी कश्तियों का किनारा भी

मैं शाम सी तेरे नाम सी
तेरे हर नशे में जाम सी
तेरे रूप में श्रृंगार सी
तेरी धूप की हूं बहार सी

तू तीर तो मैं कमान हूं
दो जिस्म में एक जान हूं
नटखट भी हूं चंचल भी हूं
तेरी आंख में झिलमिल भी हूं

तेरे मान सी तेरी शान सी
ना गुरुर बस अभिमान सी
आहट भी हूं चाहत भी हूं
एक सुकून सी राहत भी हूं

हूं साज़ सी हमराज़ सी
पलको पे हूं मैं नाज़ सी
राही भी मैं मंज़िल भी मैं
हर राह में शामिल भी मैं

पैग़ाम सी तेरे नाम सी
तेरी चाहतों के मुकाम सी
तेरी हर सुबह की नज़र हुं मैं
तू रास्ता तो सफ़र हूं मैं
तेरे ख़्वाब में हूं रात सी
बिन बात के भी बात सी
एहसास सी तेरे पास सी
तेरी हसरतों की प्यास सी

सिलवट भी मैं; हूं शिकन भी मैं
तेरी रूह की हूं तपन भी मैं
तेरे लब्ज का अल्फाज़ हूं
ना खो सके वो राज़ हूं

तू चांद तो मैं आकाश हूं
सितारों का एक लिबाज़ हूं

19. अमानत

ए दिल नादान मेरे, आज फ़िर दिल गवा बैठा।
मृग तृष्णा सी मोह में, पूरी दुनियां लूटा बैठा।।

आज फ़िर बूंदों ने, एक साज़िश रची थी।
हर बार की तरह दरवाज़े पे, बारिश आ खड़ी थी।।

ये आलम कुछ, हूबहू सा लग रहा है।
पुरानी यादों से, रूबरू सा कर रहा है।।

ए दिल नादान मेरे, आज फ़िर वही खता कर बैठा।
खुले आसमान की चाह में, पैरों तले ज़मीं मिटा बैठा।।

आज फिर इन कदमों को, तेरी गली में आने से रोका था।
कोशिश तो पूरी थी पर, रास्ते ने बार बार टोका था।।

मेरी छत से आजकल, तू नज़र नहीं आता।
सारा दिन टेहलता हूं, तू मगर नहीं आता।।

ए दिल नादान मेरे, आज फ़िर वही दर्द बढ़ा बैठा।
तपती हुई गर्मी में, इन धड़कनों को सर्द बना बैठा।।

आज फ़िर तुझे, बेनाम एक खत भिजवाया था।
तेरे जवाब के इंतज़ार में, फ़िर अरमान जगाया था।।

तेरी सड़को पे रात को, कुछ ख़ास परखने आता हूं।
सच कहूं तो अपनी फटी हुई, चिठ्ठी समेटने आता हूं।।

ए दिल नादान मेरे, आज फ़िर वही वफ़ा कर बैठा।
प्यार कि एक तरफा राह में, खुदसे दगा कर बैठा।।

आज फ़िर तेरी डगर का, मुसाफिर है गया।
तेरी एक झलक के आगे, दिल काफ़िर हो गया।।

दुपट्टा तेरा हवा में कुछ, बेफिक्र सा उड़ रहा है।
मानो जैसे मेरे हालात का तुझसे, ज़िक्र सा कर रहा है।।

ए दिल नादान मेरे, आज फिर इस दिल को घायल कर बैठा।
तेरी पायल की छम छम हुई, और फ़िर इस दिल को कायल कर बैठा।।

आज फ़िर तेरी आहटो ने, कदमों को मेरे थाम लिया।
पलट के मैं दिखता उससे पहले, किसीने तेरा नाम लिया।।

कौन है ये जिसे दिखके तुम, इतना मुस्कुरा रही हो।
कभी आंखों में आंखे डाले, तो कभी नज़रे चुरा रही हो।।

ए दिल नादान मेरे, आज फ़िर खुद में सिमट बैठा।
अंजान सी एक गुस्तक खता, फ़िर एक बार अधर में अटक बैठा।।

तेरे चेहरे की मासूमियत का मैं, दीदार करता हूं।
मैं जानता नहीं तुझे फ़िर भी, बेइंतेहा प्यार करता हूं।।

बिंदिया तेरे माथे की, कई बार देखी है।
आज गौर किया, तूने उंगली पे एक अंगुठी पहनी है।।

ए दिल नादान मेरे, आज फिर वहीं गुनाह कर बैठा।
किसी और की अमानत है वो, और तू खुदको फना कर बैठा।।

20. सफ़रनामा

होठों पे गुलाब सा
हथेली पे शबाब सा।
तेरा ज़िक्र अखों में मेरी
गुरूर है रुबाब सा।।

रात कुछ हसीन सी
फिक्र बेहिसाब थी।
छुआ तूने इस कदर
हर शर्म बेनाक़ब थी।।

पलकों पे तेरा नाम लिए
पर रूह कुछ अधूरी थी।
थामा जो साथ तेरा
हर दिल की कमी पूरी थी।।

ख़ास कुछ बात नहीं
पहले भी वक्त गुज़ारा था।
फर्क बस इतना सा था
ये वक्त अब हमारा था।।

क्या कहे दुनियां हमे
किसको अब परवाह थी।
तू मुझमें ढलने लगा
मैं भी तो तेरी तरह थी।।

सितारों से सजी रात में
चांद सा तू साथ में।
क्या कहूं क्या बात थी
उस चांदनी सी रात में।।

धड़कने नज़दीक इतनी
शोर फ़िर भी गुम कहीं।
सुकून सा बाहों में तेरी
राहतें भी कम नहीं।।

रैन से भोर तक का
तू ही नज़राना मेरा।
जुनून से इश्क़ तक का
तू ही सफ़रनामा मेरा।।

21. डर

नज़रों में उभरा अश्क नहीं मैं पानी हूं।
तेरी भूल नहीं बस मन की नादानी हूं।।

मैं दिल में हूं तो तेरी हार हूं।
मन में राहु तो बस आकार हूं।।

खयाल हूं वो जो तहज़ीब से आता है।
गलतियों के पहले एक दस्तक दे जाता है।।

जो समझ गए मेरे इशारे को तो इंसान हो।
जो भटक गए समझने पर तो हैवान हो।।

मैं डर नहीं तेरा ज़मीर हूं।
कोई ग़ैर नहीं तेरी तकदीर हूं।।

मैं ना राहु तुम तो भटक ही जाओगे।
जो मैं ना कहूं तुम तो ना जाने क्या गज़ब ढाओगे।।

मुश्किल में मुझे ना कायम रखना।
निडरता का उस समय आलम रखना।।

मैं डर हूं बस तुम्हें रोकता जाऊंगा।
हर बढ़ती धड़कन का साहिल हो जाऊंगा।।

जो लड़ गए तो आंखों से ओझल हूं।
जो अड़ गए तो तुम्हारा कायल हूं।।

हाथ छोड़ आगे बढ़ गए तो समझ जाऊंगा।
उस दिन शायद मैं हारकर भी जीत जाऊंगा।।

22. वादियां

ऐ वादी शहज़ादी..
बोलो कैसी हो....

इन सर्द हवाओं की ठंडक में
तुम तारों जैसी हो।
कहीं धूप तो कहीं छाव सी
हो गूंजती फिज़ाओं सी।
बर्फ की चादर सी हो
तुम सुकून के बिस्तर सी हो।।

ऐ वादी शहज़ादी..
बोलो कैसी हो....

क्या हाल तुम्हारा मैं पुछु
तुम खुद मेरे हमदर्द सी हो।
जो देखूं तेरी ओर कभी
मेरे ख्वाबों के मंज़र सी हो।
सन्नाटे में आहट सी हो
इस शोर में राहत सी हो।।

ऐ वादी शहज़ादी..
बोलो कैसी हो....

बेरंग सी तस्वीर में
तुम रंग की शाही सी हो।
गुमनाम सी गलियों में तुम

मेरी रूह का मुक़ाम हो।
जिस शान से हो तुम खड़ी
मेरी चाहत का इनाम हो।।

ऐ वादी शहज़ादी..
बोलो कैसी हो....

हर सुब्हो तुम नूरानी हो
हर शाम में तुम रूमानी हो।
रातों का क्या ज़िक्र करू
तुम आखों में बस जानी हो।
अदा किया ये शुक्राना तुम्हें
जो दिया खूबसूरत नज़राना मुझे।।

ऐ वादी शहज़ादी..
मैं बताऊं कैसी हो....

मेरी सासों में गर्मी सी
तहज़ीब में नर्मी सी हो

23. मोहब्बत

खोया हूं इस कदर
सांसे लापता है।
दिन ढल गया
निंदे गुमशुदा है।।

असर ये तेरा
मुझे बर्बाद करता है।
सुकून तू मेरा
मुझे आबाद करता है।।

दिल को पीछे छोड़
तू रूह में शामिल है।
जिस्म की माया परे
तू इश्क़ के काबिल है।।

हूं भटकता में पहर
तू शाम सा ढलता है।
डूबता हूं रोज़ तुझ में
तू ज़ाम सा चड़ता है।।

है शिकायत तू मेरी
तू ही मेरा गिला है।
लौटता हूं हर बार मैं
तू फिर वहीं मिला है।।

ख्वाब मेरे अब तुझे
परेशान करते है।
सावल तेरे कुछ मुझे
हैरान करते है।।

खो जाता हूं मैं कहीं
जब रोष में रहता हूं मैं।
हाथ थामे तू वहीं
जब होश में रहता हूं मैं।।

अन बन तो होती है
कुछ ज़िद तुम भी करा करो।
मैं जब भी खो जाऊं
तुम साथ मेरे चला करो।।

टकरार से प्यार से
ये तेरी मेरी इनियत है।
तेरे लिए सबसे भड़कर बस
एक मेरी मोहब्बत है।।

24. मात्रभूमि से ज़मीं तक

बीत गए वो ज़माने जब मैं भूमि कहलाया करती थी।
फ़सल के लिए माटी और दिलों की सर-ज़मीन कहलाया करती थी।।

कहीं पगडंडी तो कहीं पक्की सड़क बनके निखरी हूं।
कहीं किसिकी मेहनत तो कहीं किसिका बसेरा बनके बिखरी हूं।।

कभी फूलों से ढकी तो कभी पतझड़ में धुआं।
कभी बंजर सी रही तो कभी किसानों के लिए दुआ।।

कोई सजाता मुझको शहरों को शान समझकर।
तो कोई बचाता मुझको बस स्वच्छ भारत अभियान समझकर।।

मात्रभूमि हूं मैं बस ममता समेटे खड़ी हूं।
तुम कितना भी मिटाओ मुझे बस सुनहरे कल की ज़िद लिए अड़ी हूं।।

ये सिर्फ गंदगी नहीं मेरे दामन पर दाग़ है।
ये सिर्फ मेरा कल नहीं पूरे भारत का भाग्य है।।

25. लाडो

कब नादान से बड़ी हुई
तेरे आंचल की छांव में।
जानू मैं बस इतना की
महफूज हूं तेरी हवाओं में।।

हर सुबह की नज़र में
बस चेहरा तेरा चाहिए।
दिन बीते तब अच्छा मेरा
बस पहरा तेरा चाहिए।।

तुझसे हर वो बात कहूं
जो दिल में मेरे छुपती है।
लाख करू नादानियां
जो तुझ तक आकर रुकती है।।

मां तेरे एहसासों को
संजोगी मैं यादों में।
पास तेरे खब्बो में
आऊंगी मैं रातों में।।

मां तेरी हर सिख को
मैं पल पल यू ही निभाऊंगी।
घर से घर जो आई हूं
फिर बेटी बनकर दिखाऊंगी।।

26. नया मोड़

समझ समझ की बात है,
कुछ बात यूं ही बिन बात है।
कभी साथ तेरा सुहाना,
तो कभी रात भी काली रात है।।

कुछ रिश्ते उलझे रहते है,
फिर एक दूजे से कहते है।
था कौन गलत था कौन सही,
लो अटक गई फिर बात वहीं।।

न मैं बोलू न तुम कहना,
बस मन ही मन सुनते रहना।
एक आंच लगी है डोरी में,
लावज़ो की जोरा जोरी में।।

एक कदम का ही तो फासला,
फिर क्यू टूटेगा होसला।
बस देर न करना आने में,
चाहे आग लगे फिर ज़माने में।।

एक आस जो तुमसे लगाई थी,
हर बार मिली रुस्वाही ही।
क्यों आबरू को तोल दिया,
बिन बात कुछ भी बोल दिया।।

अब कहते हो ये रिश्ता है,
फिर क्यों आंखो से रिश्ता है।
हर रात जो आखें सोती है,
एक एक बातों पे रोती है।।

कहीं खो सा गया वो साथ तेरा,
हाथो में था जो हाथ तेरा।
वो शक्श ज़रा दीवाना था,
जिस्से मेरा अफसाना था।।

अब कौन हो तुम में क्या जानू,
वो सच था ये सच मानू।
ता उम्र का है ये रास्ता,
फिर क्यों टूटे ये वास्ता।।

न मुश्किल तुझे भुलाने में,
क्या भूल हुई मेरे आने में।
वादे तुम ऐसे करते थे,
हर पल जब मुझपे मरते थे।।

लो खो गई वो रात कहीं,
बस रह गई तो बात वहीं।
ऐसी भी क्या कोई गलती थी,
फिर इतनी क्यों बेदर्दी की।।

तुम्हें खेल लगे जो खिलोनों का,
जो नाता है हम दोनों का।
था जोड़ा जिसको रस्मों से,
जीने मरने की कसमों से।।

किस बात की तुझे शिकायत है,
क्या बस इतनी ही चाहत है।
बस करदो मेरी माफ़ी है,
क्या इतना कहना काफ़ी है।।

ऐसी भी क्या लड़ाई थी,
जो इतनी कड़ी जुदाई दी।
अब थामलो मुझको बाहों में,
तेरे दिल की उन हवाओं में।।

जाने दो हर अल्फाजों को,
न छेरो रीति रेवाज़ो को।
क्यों लाए तुम अंधेरो को,
क्या भूल गए सात फेरों को।।

ये हाथ जो तुमने थामा था,
खुशियों के रंग में बांधा था।
फिर क्यू कहते हो दूरियां,
ऐसी भी क्या मजबूरियां।।

एक बार तो खुदसे पूछलो,
मैं ना रही तो फिर सोचलो।
रेहलोगे क्या तुम यादों में,
या खो जाओगे वादों में।।

जो हो गया सो हो गया,
हर एक लम्हा खो गया।
लो साथ दो इस राह में,
नई मंजिलों की चाह में।।

फिर एक कसम तुम खाओना,
ना छोड़के कभी जाऊंगा।
चाहे रोकले ये आंधियां,
मैं लौटके फिर आऊंगा।।

27. कुदरत

छाव भी मेरी चाहिए
गांव सुनहरे चाहिए
खेतों में लहराती सरसों
दिन रात सवेरे चाहिए

क्या कहना इंसान तुम्हारा
कुछ मानो एहसान हमारा
पावन सी इस भूमी में
दर्ज़ कहां योगदान तुम्हारा

हवाओं में अब कहा़ सुगंध है
अंतिम का क्या यहीं आरंभ है
बस धुआं धुआं हर ओर ओर है
यंत्रों का बस शोर शोर है

दोष तेरा तो भूल मेरी क्यों
आंखो में है धूल तेरी क्यों
कब मानोगे बस भी करदो
कुदरत की अब झोली भरदो

कह रहें है पत्ते डाली के
हर ओर घाटा बस काली है
इंसानों का अब डेरा है
पंछियों को कहा़ बसेरा है

फिर कहते हो वो बात कहा़
पहले जैसी अब रात कहा़
अब चांद कहा़ है बादल में
जो सुकून था मां के आंचल में

सुरज की जो वो किरणे है
पर्वतों के वो जो झरने है
सोचो दुनियां इनके बिना
क्या दीवारों में है जीना

अब जाग भी जाओ बहोत हुआ
विनती करती है धरती मां
आपदाएं तो बस चेतावनी है
इतनी सी बात बताना

संतुलन है एक इस पृथ्वी का
सम्मान करो इस धरती का
फिर क्या होगा अंजाम तेरा
ये जीवन बस इनाम तेरा

हर ओर इमारत दिखती है
ना कस्बा है ना बस्ती है
फिर कहते हो सब धुआं धुआं
जब प्रकृति ही है रूआह रुआह

क्या वर्णन अब कुदरत का
जीवन ही नहीं जब हसरत का
क्या मिट्टी क्या माटी है अब
फसले ही नहीं लहराती जब

जहां आज खुला मैदान है
शहरो का जो अभिमान है
कभी घाटी थी वो फूलों की
बागो में पड़ते झूलो की

फिर नज़र लगी इन गांवों को
इस धूप में बिखरी छावो को
तोड़ा सबके अरमानों को
हर कच्चे बने मकानों को

मिटने लगी हर पगदंडी
ये जुल्म है तेरा पाखंडी
पक्की सड़को पे भागोगे
भूमी के फिर क्या लगोगे

दुनियां की काया पलट रही
बस माया ही है झलक रही
लालच के जो अब मारे हो
तुम फिर प्रकृति से हारे हो

ना आफ़त को बुलावा दो
कुदरत को ना छलावा दो
जो रूठ गई इंसानों से
मिला देगी तुम्हें शमशानो से

थम जाओ अभी कुछ बाकी है
बस इतना कहना काफ़ी है
ना रुके जो तुम तो खैर नहीं
लाशों का होगा ढेर यहीं